द्वितीय–अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय – द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना –

किसी भी शोधकार्य को करने से पूर्व यह आवश्यक है कि शोधकर्ता को शोध से सम्बन्धित जानकारी होना आवश्यक है। सतत् मानव प्रयासों से भूतकाल में एकत्रित ज्ञान का लाभ अनुसंधान में मिलता है। अनुसंधान के द्वारा प्रस्तावित अध्ययन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संबंधित समस्याओं पर पहले किये गये कार्यो के बिना जो कि स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता। अनुसंधान प्रारम्भ करने की प्रथम सीढ़ी साहित्य का पुनरावलोकन है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन अनुसंधानकर्ता के लिये महत्वपूर्ण है इसके अभाव में वस्तुनिष्ठ रूप से अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाना जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र मे कितना कार्य हो चुका है तब तक समस्या का निर्धारण व परिसीमन करने में तथा शोधकार्य की रूपरेखा तैयार करने में कठिनाई आती है। शोध से सम्बन्धित पूर्व जानकारी हमें अपने कार्य का नया रूप व नये आयाम देने में मददगार साबित होती है।

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष प्रारूप का स्थान बनाने के लिये शोधकर्ता को पूर्ण सिद्धान्त एवं शोधों से भलीभांति परिचित होना चाहिऐ। इस जानकारी को निश्चित करने के लिये व्यवहारिक ज्ञान से प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य को पुनरानिरीक्षण शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया गया है।

बोर्ग (1965) के अनुसार "किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिलों के समान है जिस पर सारा भावी कार्य आधारित होता है, यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नीव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारा कार्य प्रभावहीन व महत्वहीन होने की सम्भावना है।"

बेस्ट (1963). के अनुसार "व्यवहारिक दृष्टि से हमारा मानव मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों से प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों के अतिरिक्त, जो प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से प्रारम्भ करते हैं। मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहित एवं सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में मानव प्राचीन अनुभवों को संग्रहित एवं सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में मानव का निरन्तर योग सभी क्षेत्रों में इसके विकास का आधार है।

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है कि सम्बन्धित साहित्य के द्वारा किसी भी अध्ययन से सम्बन्धित समस्त साहित्य उपलब्ध किया जा सकता है कि किसी क्षेत्र में कितना कार्य किस रूप में हो चुका है? लोगों ने क्या परिकल्पनाऐं की थीं? किस विधि से ऑकड़ों का संग्रहण व सारणीयन व विश्लेषण करके क्या परिणाम निकले? इसका निर्णय बड़ा ही महत्वपूर्ण तथा अनुसंधान कार्य की वास्तविक पूर्णता में मदद करता है। शोधकर्ता ने उपुयक्त विचारों को ध्यान में रखते हुए शोधकार्य की समीक्षा की ताकि प्रस्तुत अध्ययन के नियोजन एवं महत्वपूर्ण पदों के निर्धारण में सहायता मिल सके।

2.2 सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन के लाभ –

1. पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के सम्बन्ध में अंतर दृष्टि प्राप्त हो सकती है।
2. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिये आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।
3. सर्वेक्षण न करने से जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा अच्छी प्रकार से किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है।
4. सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधानकर्ता को अपने क्षेत्र की सीमा निर्धारण करने में सहायता मिलती है।
5. पूर्व अनुसंधान के अध्ययन से सम्बन्धित नवीन समस्याओं का पता चलता है।

6. सत्यापन के लिये कुछ अनुसंधानों को नवीन दशाओं में शोध करने की आवश्यकता होती है।

7. इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन का अनुसंधान में बहुत महत्व है।

2.3 सम्बन्धित शोधकार्यो का पुनरावलोकन –

संबंधित साहित्य का अध्ययन करने के लिये विभिन्न मनौवैज्ञानिक एवं सामाजिक शोध ग्रंथ, इन–साइक्लोपीडिया एवं पत्र–पत्रिकाओं का अवलोकन किया। परन्तु इस समस्या से सम्बन्धित बहुत ही कम शोध कार्य मिले सम्भवतः किसी शोध कार्य का ध्यान इस समस्या की ओर अग्रेषित नहीं हुआ इस प्रकार के जो कार्य हुये थे अंशतः छात्रों पर ही किये गये इसलिये ऐसा शोध कार्य भारतवर्ष में नहीं के बराबर हुआ जिसका सम्बन्ध प्रत्यक्ष रूप से इस समस्या से है। मुख्य कार्य जो किये गये यद्यपि उनका प्रत्यक्ष सम्बन्ध प्रस्तुत समस्या से है।

श्रीवास्तव (1990) ने शैक्षिक मूल्यों के द्वारा शिक्षकों को रुचि और कार्य संतुष्टि में बदलाव का अध्ययन किया।

उपरोक्त शोध कार्य के उद्देश्य इस प्रकार थे।

- शिक्षा के विविध स्तर पर करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं में रुचि का अध्ययन करना।
- शिक्षकों में विविध प्रकार के मूल्यों द्वारा रुचि में होने वाले बदलाव का अध्ययन करना।
- शिक्षा के संस्थानों के विविध क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों में मूल्यों द्वारा कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना और शिक्षक–शिक्षिकाओं के परिवर्तन के अंतर का अध्ययन करना। प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर के 300 शिक्षकों का यादृच्छिक पद्धति से न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन के लिये निम्न उपकरणों का उपयोग किया गया।

मुखोपाध्याय – रुचि में बदलाव की परिसूची

प्रमोद कुमार – कार्य संतुष्टि प्रश्नावली

एच.वी.एल. सिन्हा – शिक्षक मूल्य परिसूची

प्रदत्तों के संकलन हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, सहसंबंध की सार्थकता, फिशर का जेड सूत्र का उपयोग किया गया इसमें मुख्य निष्कर्ष आये।

- शिक्षिकाओं में शिक्षकों की अपेक्षा कार्य संतुष्टि अधिक पाई गई।
- प्राथमिक शिक्षकों में सामाजिक मूल्यों एवं रूचि परिवर्तन के सम्बन्ध में सार्थक अंतर पाया गया।
- माध्यमिक शिक्षकों के लिंग भेद अनुसार आर्थिक मूल्य रूचि बदलाव में सार्थक अंतर पाया गया।
- उच्च स्तर के शिक्षकों के लिंग भेद अनुसार मूल्यों एवं रूचि परिवर्तन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

वशिष्ट (1997) ने एक प्रोजेक्ट "इण्टरनेशल एज्यूकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग प्रोग्राम" शुरू किया। जिसमें अध्यापकों व विद्यालयी शिक्षा में मूल्यों को बढ़ावा देने के लिये आष्टांग योग पर आधारित एक नयी विधि तैयार की गई। इस विधि का प्रयोग से निम्न परिणाम प्राप्त हुए।

- उनके मूल्य संबंधित क्षेत्रों में एक सार्थक विकास देखा गया।
- इस प्रयोग में लाने से बालकों में मूल्यों के प्रति जागरूकता व ज्ञानात्मक अभिवृत्तियों का विकास देखा गया।
- निम्न उपलब्धि वाले बालकों के प्रतिशत में गिरावट आयी व मध्यम उपलब्धि वाले बालक, उच्च उपलब्धि वाले बालकों में बदल गये।

सेन गुप्ता (2001) ने वर्तमान समय के शिक्षण अधिगम वातावरण में अच्छे अध्यापक के गुणों व मूल्यों के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया और पाया कि

- बालक अध्यापकों के व्यक्तिगत मूल्यों, उनके व्यवसायिक मूल्यों, नवाचारों तथा शिक्षक अधिगम तकनीकों को ज्यादा प्राथमिकता देते हैं।
- वे अध्यापक जो बालको को व्यक्तिगत स्वतंत्रता देते है उनकी समस्याओं को समझते हैं तथा स्वयं आदर्श प्रस्तुत करते है, उन्हें बालक महत्ता देते हैं।

काकुर (1981) ने शिक्षकों के मूल्य का छात्रों पर असर का अध्ययन किया।

इस शोध के द्वारा छात्रों के मूल्यों पर शिक्षकों का परीक्षण किया गया ऑलपोर्ट बर्नोन लिण्डजे के मूल्य अध्ययन मापनी का ब्रिटिश रूपान्तरण का उपयोग किया गया न्यायदर्श के रूप में पटियाला से 150 स्नातक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया। परिणाम यह दर्शाते हैं कि प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की समाप्ति के पश्चात प्रशिक्षणार्थियों में सामान्य से कम परिवर्तन दिखाई दिया। यद्यपि परिणाम यह भी दर्शाता है कि शिक्षकों का छात्रों के मूल्यों पर क्या प्रभाव है। अतः शोधकर्ता सावधान करता है कि परिणामों को सामान्यीकरण नहीं किया जा सकता क्योंकि वह परिणाम कुछ विशिष्ट परिस्थितियों से प्राप्त हुये है। जिनके तहत शोध कार्य सम्पन्न किया गया।

अरूण (1985) ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के सेकेण्डरी विद्यालयों के बालक व बालिकाओं के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया और यह पाया –

- शहरी क्षेत्र बालक–बालिकाओं के शैक्षिक मूल्य ग्रामीण क्षेत्र के बालक–बालिकाओं की तुलना में अधिक है।
- बालिकाओं में बालकों की तुलना में शैक्षिक मूल्य अधिक है।

राघवेन्द्र (1964) ने सामाजिक रूप से वंचित व अवंचित छात्रों में मूल्य प्राथमिकता का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि

- सामाजिक रूप से वंचित व अवंचित छात्रों के सामाजिक एवं धार्मिक मूल्यों में सार्थक अंतर हो।
- बालक व बालिकाओं में सैद्धान्तिक सामाजिक व सौंदर्यात्मक मूल्यों के संदर्भ में सार्थक अंतर है।

- बालिकाऐं बालकों की तुलना में सौंदर्यात्मक मूल्यों में ज्यादा महत्व देती है।

आनंद (1980) ने शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों व कार्य संतुष्टि पर अध्ययन किया है। उपरोक्त शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों के मूल्यों और उनकी संतुष्टि में सम्बन्ध को खोजना है। इस शोधकार्य में 143 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया जिसमें 99 पुरूष व 44 महिलाऐं थी। जो कि सिक्किम के विभिन्न स्कूलों में अध्यापन का कार्य करते हैं। एक कार्य संतुष्टि और ऑलपोर्ट बर्नोन लिण्डजे की मापनी का उपयोग किया गया अध्ययन के पश्चात् यह पाया गया कि शिक्षकों में शोध राजनैतिक और आर्थिक मूल्यों को अधिक पाया जबकि शिक्षकों में सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक मूल्य अधिक देखे गये। धार्मिक और सौंदर्यात्मक मूल्य निम्न स्तर पर महिला और पुरूष शिक्षकों में पाये गये। पुरूषों की तुलना में महिलाओं में कार्य संतुष्टि अधिक थी यह भी देखा गया कि धार्मिक और सौदर्यात्मक मूल्य और शिक्षकों की संतुष्टि में सकारात्मक सहसम्बन्ध थे।

मिस्त्री (1988) ने ग्रामीण, शहरी और निजी गुजराती कॉलेज और माध्यमिक शिक्षकों की अभिवृत्ति, मूल्य और व्यक्तित्व के लक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

यह शोधकार्य उस अध्ययन को व्यक्त करता है, जिसके द्वारा उन कारकों को खोजा गया, जिससे मूल्यों अभिवृत्तियों और शहरी, ग्रामीण तथा अनौपचारिक गुजराती शिक्षकों के जीवन जीने के तरीकों में अंतर पाया जाता है। इस अध्ययन हेतु ऑलपोर्ट की प्रश्नावली एडवर्ड की व्यक्तित्व महत्व अनुसूची और मरे की व्यक्तित्व आवश्यक परीक्षण गुजरात के ग्रामीण व शहरी के यादृच्छिक 111 शिक्षकों पे किया गया। अनौपचारिक गुजराती शिक्षकों का एक नियमित ग्रुप भी न्यायदर्श के रूप में लिया गया। राजनैतिक सैद्धान्तिक, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक और सौंदर्यात्मक मूल्यों का अध्ययन किया गया। परिणाम प्रकट करते हैं कि जो अगुजराती थे वे अधिक आत्मकेन्द्रित और अधिक

अध्ययनशील थे। जबकि ग्रामीण शहरी गुजराती शिक्षक लोग केन्द्रित थे। संघ सचेतक थे आर्थिक रूप से केन्द्रित और बहुत अधिक धार्मिक थे।

अत्रेय एवं जयशंकर (1989) शिक्षकों के मूल्य एवं कार्य संतुष्टि में निम्न, औसत एवं उच्च अध्यापन प्रभावशीलता का चयन किया है।

उपरोक्त शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों का निम्न औसत एवं उच्च परिणामकारक अध्यापन के लिये मूल्यों एवं कार्य संतुष्टि से संबंध का अध्ययन करना था।

इस कार्य के लिये मेरठ विश्वविद्यालय के 600 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। प्रो. गिलानी द्वारा प्रमाणित मूल्यों का अध्ययन प्रश्नावली और कुमार एवं माथुर की शिक्षक कार्य संतुष्टि प्रश्नावली का उपयोग किया गया। इसका निष्कर्ष यह आया कि अध्यापन प्रभावशीलता अंशतः कोटि पर तथा कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया। अध्यापन प्रभावशीलता सामान्य रूप से पायी गई।